

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 27, आधुनिक धर्मशास्त्र

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह आधुनिक धर्मशास्त्र पर सत्र 27 है।

खैर, यह 9 दिसंबर है। हम 8 दिसंबर को साथ नहीं थे। 8 दिसंबर 1854, 8 दिसंबर 1854 को रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा एक बहुत ही महत्वपूर्ण घोषणा की गई थी।

और वह क्या होता? 1854. वह मैरी के बेदाग गर्भाधान का सिद्धांत था, जिसे 8 दिसंबर 1854 को घोषित किया गया था। तो कल उस दिन की सालगिरह थी।

लेकिन हम 9 दिसंबर को यहां हैं। यह संभव नहीं लगता। ठीक है, चलो प्रार्थना करते हैं, और फिर हम शुरू करेंगे।

हमारे दयालु स्वर्गीय पिता, हम रुकते हैं और धन्यवाद के साथ इस पाठ्यक्रम को देखते हैं। हम आपको उन अवसरों के लिए धन्यवाद देते हैं जहाँ हम एक दूसरे को सिखाने और एक दूसरे से सीखने में सक्षम हुए हैं। हम आपको सुधार से लेकर अब तक ईसाई विचारों के विकास के व्यापक दृष्टिकोण को देखने में हमारी मदद करने के लिए धन्यवाद देते हैं।

हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमारी सहायता की और इसमें हमारी सहायता की और हमें अपनी सोच और अपने धर्मशास्त्र को आकार देने में मदद की कि हम उस समुदाय के संदर्भ में क्या सच समझते हैं जिससे हम संबंधित हैं, चर्च के संदर्भ में। और इसलिए, हम इसके लिए आभारी हैं। हम छात्रों को धन्यवाद देते हैं, और हम उनके जीवन में आपके हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना करते हैं।

कुछ दिनों में अंतिम परीक्षाएँ देनी होंगी और पेपर पूरे करने होंगे, शायद उन्हें चर्चा समूह या प्रस्तुतियाँ देनी होंगी। हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन्हें हृदय, मन, शरीर और आत्मा की अतिरिक्त शक्ति प्रदान करें ताकि वे पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए जो काम करना है, वह कर सकें और यह अच्छे तरीके से पूरा हो, जिससे आपको और हमें दोनों को सम्मान मिले। इसलिए इस दिन और आने वाले सप्ताह के लिए और जो भी काम करना है, उसके लिए हमारे दिल में धन्यवाद के साथ, हम प्रार्थना करते हैं कि हम इसे आपके लिए करें, और हम ये बातें हमारे प्रभु मसीह के नाम पर खुशी से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

ओह, और वैसे, पहली बार, गॉर्डन कॉलेज इलेक्ट्रॉनिक रूप से पाठ्यक्रम मूल्यांकन करने जा रहा है, इसलिए कोई लिखित पाठ्यक्रम मूल्यांकन नहीं होगा, इसलिए आप इसके नोटिस देखने जा रहे हैं। मुझे नहीं पता कि वे कैसे सही तरीके से आने वाले हैं। नोटिस सीधे आप लोगों के पास

आने वाले हैं, और फिर इसे कैसे भरना है और इस तरह की सभी चीजें। ठीक है, मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर हूँ, और अब यह सच में स्वीकारोक्ति का समय है।

मैं ई3, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति को पूरा किए बिना ही ई से एफ पर चला गया, और पिछली बार जब हम व्याख्यान के लिए जाना चाहते थे, तो मैं सीधे एफ पर चला गया। मैं सीधे एफ पर चला गया; ईसाई धर्म अन्य धर्मों में खुद को देखता है। इसलिए मैं एफ खत्म करने जा रहा हूँ, और फिर मैं वापस जाऊंगा, और शायद यह पाठ्यक्रम को खत्म करने का एक अच्छा तरीका है, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति, आज हम कहाँ हैं? हालांकि, ईसाई धर्म अन्य धर्मों में खुद को देखता है। मैं यहां सिर्फ दो चीजें जल्दी से करना चाहता हूँ।

नंबर एक, प्रोटेस्टेंटिज्म और रोमन कैथोलिकिज्म की बातचीत और हमने पहले ही रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उल्लेख किया है, जब वे एक-दूसरे से बात करना शुरू करते हैं, और उसमें, हमने उन समस्याओं का उल्लेख किया है जो प्रोटेस्टेंट को रोमन कैथोलिकों से हैं, शायद आपने अपने नोट्स में यह लिखा हो, है न? फिर, हमने उस समस्या का भी उल्लेख किया है जो रोमन कैथोलिक को प्रोटेस्टेंट से है, और शायद आपने अपने नोट्स में यह लिखा हो, क्योंकि मुझे लगता है कि हम उस दिन यहीं रुके थे, जब हमने बातचीत बंद की थी। इसलिए, मुझे लगता है कि हम यहीं थे। लेकिन बस फिर से दोहराना है क्योंकि हम कुछ समय से इस पर नहीं थे क्योंकि हम अपने चर्चा समूहों और सब कुछ में थे, लेकिन जैसे-जैसे रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट ने एक-दूसरे को देखा है, ऐसे सवाल उठे हैं जैसे कि रोमन कैथोलिक चर्च के लिए परंपरा और शास्त्र के अधिकार की तुलना में शास्त्र का अधिकार क्या है? रोमन कैथोलिक चर्च में मैरी के स्थान की तुलना में प्रोटेस्टेंटिज्म में मैरी का स्थान क्या है? पोप के स्थान की तुलना में प्रोटेस्टेंटिज्म में पोप का क्या स्थान है, या रोमन कैथोलिक चर्च में पोप की सोच की तुलना में प्रोटेस्टेंटिज्म में पोप की सोच क्या है? और इसलिए आप कैनन के बारे में और भी बहुत कुछ पूछ सकते हैं? मेरा मतलब है, प्रोटेस्टेंट कैनन को कैसे देखते हैं? रोमन कैथोलिक कैनन को कैसे देखते हैं? आप और भी बहुत कुछ पूछ सकते हैं।

तो, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक के बीच इस तरह के मतभेद रहे हैं, जिनसे उन्हें निपटना पड़ा है। हमने उस तरह के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को कहा है जो वर्षों से विकसित हुआ है। अब, हम ऐतिहासिक परिवर्तनों और क्या ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं, इस पर आते हैं।

मैं रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट संवाद को आकार देने के मामले में हुए चार बड़े बदलावों का ज़िक्र करने जा रहा हूँ। तो पहला बदलाव तो आप जानते ही होंगे, वह है वेटिकन ॥ 1962 से 1965 तक वेटिकन ॥ ने रोमन कैथोलिक चर्च को पूरी तरह बदल दिया।

और हम पहले ही पोप जॉन XXIII के साथ वेटिकन ॥ पर व्याख्यान दे चुके हैं। रूथ और मैं गुरुवार की रात जिम रूडिन के एक शानदार व्याख्यान में थे। और जिम रूडिन कैपस में यहूदी धर्म के बारे में बात कर रहे थे।

लेकिन उस रात उन्होंने वेटिकन ॥ के बारे में बात की। वेटिकन ॥ के बारे में एक सवाल आया। और उन्होंने वेटिकन ॥ के बारे में बात की।

दरअसल, उन्होंने वही बात कही जो मैंने व्याख्यान में कही थी, कि पोप जॉन XXIII को पोप बनाया गया था जिसे वे केयरटेकर पोप कहते थे। और जिम रुडिन ने इसका उल्लेख किया। हमारे पास कोई वास्तविक पोप नहीं है, इसलिए हम इस आदमी को पद पर बिठा देंगे, और वह ज्यादा कुछ नहीं करेगा।

और फिर वह मर जाएगा, और फिर हमें एक असली पोप मिलेगा। और उसने वेटिकन II को बुलाया, और पूरा रोमन कैथोलिक चर्च फट गया। तो, वेटिकन II निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक परिवर्तन था।

वेटिकन द्वितीय ने जो कुछ किया, उसका एक हिस्सा रोमन कैथोलिक चर्च को प्रोटेस्टेंटवाद के करीब ले जाना था। तो यह बहुत उल्लेखनीय था। तो यह एक ऐतिहासिक बदलाव है।

दूसरा ऐतिहासिक परिवर्तन जिसके बारे में हमने पिछले कुछ हफ्तों में काफ़ी चर्चा की, और वह था जॉन एफ़ कैनेडी का राष्ट्रपति पद पर चुना जाना। दुनिया भर में रोमन कैथोलिक धर्म और प्रोटेस्टेंटों द्वारा रोमन कैथोलिक धर्म को किस तरह से देखा जाता है, इस संदर्भ में, संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले रोमन कैथोलिक राष्ट्रपति के रूप में उनके चुनाव ने चीजों को उल्लेखनीय रूप से बदल दिया और एक तरह से, रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में बेहतर समझ का मार्ग प्रशस्त किया। तीसरा परिवर्तन वह है जिसे एक व्यक्ति ने खाइयों में एक्यूमेनिज्म कहा है।

अब, खाइयों में सार्वभौमिकता क्या है? खाइयों में सार्वभौमिकता समान नैतिक और नैतिक मूल्यों को खोजना है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रोटेस्टेंट ने रोमन कैथोलिकों के साथ जो खोज की है, उनमें से एक यह है कि रोमन कैथोलिकों के साथ नैतिक और नैतिक रूप से हमारी बहुत सी समानताएँ हैं। और खाइयों में सार्वभौमिकता यह है कि रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट और रूढ़िवादी, कई मामलों में, एक साथ खड़े होने में सक्षम हैं, नैतिक और नैतिक मुद्दों पर आपसी समर्थन देते हैं।

इसलिए, विवाह और परिवार के मूल्य जैसे मुद्दे, उदाहरण के लिए, रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और ऑर्थोडॉक्स विवाह और पारिवारिक मूल्यों के मामले में कई मूल्यों को साझा करते हैं। यह उस मुद्दे पर खाइयों में एक तरह की सार्वभौमिकता है।

आज विवाह और पारिवारिक मूल्यों पर बहुत से स्थानों से बहुत अधिक हमले हो रहे हैं। हालाँकि, रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और पूर्वी रूढ़िवादी लोगों की मान्यताएँ और समझ एक जैसी हैं। गर्भपात।

रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों के गर्भपात पर विचार एक जैसे हैं। हमेशा एक जैसे नहीं होते। वे हमेशा एक ही पृष्ठ पर नहीं होते।

लेकिन गर्भपात पर उनके विचार समान हैं। और यह खाइयों में सार्वभौमिकता है। पोर्नोग्राफी का खंडन, सेक्स व्यापार, तस्करी, और इसी तरह की अन्य चीजों का खंडन।

रोमन कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और निश्चित रूप से रूढ़िवादी, इन मुद्दों पर भी उल्लेखनीय रूप से समान विचार और नैतिक मूल्य रखते हैं। इसलिए, खाइयों में सार्वभौमिकता तीसरे नंबर पर होगी। उनके पास ऐतिहासिक परिवर्तन हैं।

नंबर चार यहाँ एक दिलचस्प बात है। और यह एक आंदोलन है। मैं अभी भी इस बारे में उलझन में हूँ।

मैं अभी भी यह सब नहीं समझ पाया हूँ। लेकिन चौथा सवाल यह है कि बहुत से इंजीलवादी रोमन कैथोलिक धर्म और पूर्वी रूढ़िवादी धर्म में जा रहे हैं। इंजीलवादी जो इंजील चर्चों में पले-बढ़े हैं, वे क्यों ऐसा कर रहे हैं? उनके जीवन में यह बदलाव क्यों आ रहा है और वे यह कदम क्यों उठा रहे हैं? हमारे अपने स्नातकों और प्रोफेसरों में से एक, जो नोट्रे डेम में पढ़ाते हैं, क्रिश्चियन स्मिथ, हाल ही में रोमन कैथोलिक बन गए हैं।

तो, यह उनके जीवन में एक दिलचस्प बदलाव है। मेरा मतलब है, उन्हें नोट्रे डेम में काम पर नहीं रखा गया था। उन्हें नोट्रे डेम में प्रोटेस्टेंट के तौर पर काम पर रखा गया था, लेकिन वे रोमन कैथोलिक बन गए।

तो, उनकी तीर्थयात्रा दिलचस्प रही। मेरा मानना है कि बहुत से इंजीलवादी रोमन कैथोलिक चर्च या पूर्वी रूढ़िवादी चर्च की परंपरा की ओर आकर्षित होते हैं। वे रोमन कैथोलिक चर्च या पूर्वी रूढ़िवादी चर्च के पूजा अनुभव की ओर आकर्षित होते हैं।

तो चर्च की परंपरा, लंबे समय से चली आ रही परंपरा, यह भावना कि चर्च उन 2,000 साल के चर्च इतिहास से जुड़ा हुआ है जो आपको हमेशा प्रोटेस्टेंट चर्चों में नहीं मिलता, और साथ ही पूजा के नाटक की भावना जो आपको रोमन कैथोलिक चर्च या पूर्वी रूढ़िवादी चर्च में मिलती है जो आपको हमेशा प्रोटेस्टेंट चर्चों में नहीं मिलती, मुझे लगता है कि यही बात उन्हें रोमन कैथोलिक धर्म और पूर्वी रूढ़िवादी धर्म की ओर आकर्षित करती है। लेकिन यहाँ कुछ बड़ा चल रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए, लगभग हर तीन साल में, मैं प्रोटेस्टेंट-कैथोलिक रूढ़िवादी और तुलनात्मक ईसाई धर्म पर एक वरिष्ठ सेमिनार पढ़ाता हूँ।

और हम कुछ फील्ड ट्रिप भी करते हैं। हम जो फील्ड ट्रिप करते हैं, उनमें से एक ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च की है। और क्या आश्चर्य हुआ! हम चर्च में गए और गॉर्डन के कई भूतपूर्व लोगों से मिले, गॉर्डन कॉलेज के स्नातक, जो ऑर्थोडॉक्स बन गए थे और उस चर्च में जाते थे।

और मुझे इसका एहसास नहीं था। मुझे नहीं पता था कि गॉर्डन से जुड़े कई लोग ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स चर्च में जा रहे थे। और इसलिए, मैं हमेशा उनसे पूछता रहता हूँ, आपकी कहानी क्या है? आप इंजीलवाद से ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स में क्यों गए? लेकिन यह एक दिलचस्प कहानी है।

तो, निश्चित रूप से, पश्चिमी दुनिया में, लोग पूर्वी रूढ़िवादी कैथोलिक धर्म में जा रहे हैं। और वहाँ भी इंजीलवादी लोग ऐसा कर रहे हैं। अब दक्षिण अमेरिका में, यह थोड़ी अलग कहानी है।

क्योंकि दक्षिण अमेरिका में, यह उल्टा है। बहुत सारे रोमन कैथोलिक सैकड़ों हज़ारों की संख्या में इंजीलवाद में आ रहे हैं, और विशेष रूप से पेंटेकोस्टलिज़्म में आ रहे हैं। इसलिए, दक्षिणी गोलार्ध में, यह बिल्कुल विपरीत काम कर रहा है।

सवाल यह है कि उन्हें इंजीलवाद और पेंटेकोस्टलवाद की ओर क्या आकर्षित कर रहा है? जाहिर है, दक्षिण अमेरिका में उनमें से कुछ लोग इन पेंटेकोस्टल चर्चों या अन्य प्रोटेस्टेंट चर्चों में आत्मा की एक तरह की जीवंतता, ईश्वर की हलचल देख रहे हैं जो उन्होंने अपने पारंपरिक चर्चों में नहीं देखी थी। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि लड़के, इंजीलवाद और रोमन कैथोलिकवाद और कुछ हद तक पूर्वी रूढ़िवादी के बीच दोनों तरफ आंदोलन है। तो अब, प्रकृति ऐतिहासिक रूप से बदल रही है।

मैं सिर्फ संवादों की प्रकृति और फिर जारी सहमति या असहमति का ज़िक्र करना चाहता हूँ, लेकिन संवाद की प्रकृति। यह दिलचस्प है कि रोमन कैथोलिकों ने सभी तरह के समूहों के साथ संवाद शुरू कर दिया है। रोमन कैथोलिकों के संवादों की प्रकृति से आप हैरान रह जाएंगे।

ठीक है, तो, उदाहरण के लिए, आपको आश्चर्य नहीं होगा कि कैथोलिक और एंग्लिकन एक दूसरे के साथ संवाद कर रहे हैं क्योंकि एंग्लिकन और रोमन कैथोलिक धर्म में बहुत समानता है। और कुछ एंग्लिकन ऐसे भी हैं जो लगभग रोमन कैथोलिक हैं। हमने ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के बारे में बात की, तो आप इसके बारे में जानते हैं।

और आज बेशक ऑक्सफोर्ड आंदोलन चल रहा है। तो, आप इससे हैरान नहीं होंगे। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि रोमन कैथोलिक और लूथरन एक दूसरे के साथ संवाद कर रहे हैं, जो एक बहुत ही दिलचस्प ऐतिहासिक घटना है क्योंकि मार्टिन लूथर को रोमन कैथोलिक चर्च से बहिष्कृत कर दिया गया था।

रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में उनके पास कहने के लिए कुछ बातें थीं, जो हमेशा प्रशंसात्मक नहीं थीं। लेकिन रोमन कैथोलिक और लूथरन संवाद में हैं, जो दिलचस्प है। वास्तव में, उस रात जिम रुडिन से पूछे गए सवालों में से एक लूथरन के साथ यहूदी समुदाय की बातचीत के बारे में था, जो दिलचस्प है क्योंकि लूथर ने यहूदी समुदाय के बारे में कुछ बहुत कठोर बातें भी कही थीं।

तो, मुझे लगा कि यह एक दिलचस्प बात है। और आप सभी तरह के समूहों का उल्लेख कर सकते हैं। एक और बात जो मैं बताने जा रहा हूँ, हालाँकि, जो आपको आश्चर्यचकित कर सकती है वह यह है कि रोमन कैथोलिक और सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट ने एक-दूसरे के साथ लंबी चर्चा की है।

और आप यह नहीं सोचेंगे कि उनमें बहुत ज़्यादा समानता होगी। सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट एक बहुत ही मज़बूत और बढ़ता हुआ प्रोटेस्टेंट संप्रदाय है। दुनिया भर में अब लगभग 25 मिलियन लोग हैं।

तो, अब वे काफी मज़बूत संप्रदाय हैं। लेकिन आप नहीं सोचेंगे कि उनमें बहुत कुछ समान होगा। लेकिन यहां तक कि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट और रोमन कैथोलिक भी बातचीत कर रहे हैं।

तो, प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिक के बीच संवाद की व्यापकता के संदर्भ में संवादों की प्रकृति दिलचस्प है। एंग्लिकन से लेकर, जो आपको लगता है, हाँ, यह सही लगता है। लेकिन फिर आप लूथरन तक पहुँचते हैं।

और फिर आप सातवें दिन के एडवेंटिस्टों तक भी पहुँचते हैं जो संवाद कर रहे हैं। ठीक है, निरंतर सहमति और असहमति संख्या डी। और मुझे उनका उल्लेख करने दें। मेरे पास यहाँ चार या पाँच हैं जो जारी हैं।

मुझे लगता है कि ये लगातार बातचीत है, आप कह सकते हैं। यह गुरुवार की रात की तरह है। यह एक यहूदी के रूप में जिम रुडिन और एक इंजीलवादी के रूप में मार्व विल्सन के साथ मिलकर बात करने जैसा है।

वे कुछ बातों पर सहमत हो सकते हैं। लेकिन कुछ बातें ऐसी हैं, जहाँ, जैसा कि मार्व ने कहा, हम गतिरोध की स्थिति में हैं। और चर्चा जारी रहती है।

खैर, यह प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों के लिए सच है। तो, मैं पाँच का जिक्र करूँगा। नंबर एक, बेशक, मैरी है।

मैंने पाठ्यक्रम में कहा है। मैं अभी भी कहता हूँ कि कैथोलिकों ने मैरी को बहुत अधिक महत्व दिया है। प्रोटेस्टेंटों ने मैरी को बहुत कम महत्व दिया है।

मुझे लगता है कि हम मरियम के बारे में प्रचार करने और मरियम के बारे में शिक्षा देने से पीछे हट गए, क्योंकि मरियम के बारे में रोमन कैथोलिक लोगों का नज़रिया उनके लिए बहुत बुरा था। लेकिन हमने प्रोटेस्टेंट चर्च में मरियम को बहुत कम महत्व दिया। वह हमारे प्रभु की माँ हैं।

और मरियम और अन्य बातों के बारे में बहुत बढ़िया धर्मशास्त्रीय अंश हैं। यह नंबर एक है। नंबर दो अधिकार का मुद्दा है।

और अधिकार का मुद्दा यह है कि प्रोटेस्टेंट के लिए बाइबल ही आधिकारिक शब्द है। कैथोलिक के लिए यह बाइबल और परंपरा है। इसमें कोई बदलाव नहीं होने वाला है।

इस पर बहुत चर्चा हो सकती है, लेकिन इसमें कोई बदलाव नहीं होने वाला है। तो, नंबर तीन है चर्च की संरचना। रोमन कैथोलिक चर्च का दावा है कि चर्च की संरचना इस तरह से है क्योंकि यह शुरुआती चर्च की संरचना थी, और पीटर पहले पोप थे।

प्रोटेस्टेंट इसे नहीं मानते। प्रोटेस्टेंट कहते हैं कि आप न्यू टेस्टामेंट से किसी विशेष चर्च संरचना को साबित नहीं कर सकते। और बेशक, प्रोटेस्टेंट रोमन कैथोलिक चर्च की तरह पोप का पद स्वीकार नहीं करते।

तो, नंबर तीन। नंबर चार वो होगा जिसे मैं बुनियादी प्रथाएँ कहूँगा। रोमन कैथोलिक चर्च और प्रोटेस्टेंट चर्च की बुनियादी प्रथाएँ।

तो, रोमन कैथोलिक चर्च में मूल प्रथा पुरोहिताई का ब्रह्मचर्य है। अब, हमने पाठ्यक्रम में देखा है कि कैसे वे एंग्लिकन पुजारियों को रोमन कैथोलिक पादरी बनने की अनुमति दे रहे हैं। उनके पास अपनी पत्नी और परिवार वगैरह हैं।

तो, वहाँ कुछ असहमति है। लेकिन निश्चित रूप से, पादरी का ब्रह्मचर्य एक बुनियादी प्रथा होगी जिसके साथ एक तरह की असहमति होगी। निश्चित रूप से, महिलाओं के समन्वय का पूरा मुद्दा एक मुद्दा होगा।

हमने शुक्रवार को अपने चर्चा समूह में डोनाल्ड डेटन की पुस्तक से निकलने वाले नारीवाद के बारे में बात की। लेकिन महिलाओं के समन्वय का पूरा मुद्दा एक दिलचस्प चर्चा होगी क्योंकि कुछ प्रोटेस्टेंट संप्रदाय महिलाओं को नियुक्त करते हैं। कुछ नहीं करते।

रोमन कैथोलिक चर्च महिलाओं को मंत्रालय के लिए नियुक्त नहीं करता है। तो यह एक बुनियादी प्रथा होगी। इस बारे में चर्चा होगी।

इसमें कोई संदेह नहीं है। अंतिम असहमति संस्कारों, संस्कारों की संख्या को लेकर होगी क्योंकि अधिकांश प्रोटेस्टेंट मानते हैं कि दो संस्कार हैं। रोमन कैथोलिक चर्च का मानना है कि सात संस्कार हैं।

और संस्कारों की प्रकृति पर भी। हम पहले ही सुधार के समय से ही संस्कारों की प्रकृति के बारे में बात कर चुके हैं। इसलिए, संस्कारों की संख्या और प्रकृति हमेशा विवाद का विषय रहेगी, हालाँकि इस पर हमेशा चर्चा हो सकती है।

तो, इसमें कोई संदेह नहीं है। ठीक है, तो रोमन कैथोलिक चर्च और प्रोटेस्टेंटिज्म और चर्चाएँ। अब, मुझे बस एक मिनट के लिए वहाँ रुकना है।

फिर, हम दूसरे नंबर पर जाएंगे, जो ईसाई धर्म से आगे बढ़कर अन्य विश्व धर्मों के प्रति तीन दृष्टिकोण हैं। लेकिन क्या प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों के बीच इस तरह के संवाद के बारे में कोई सवाल है? और क्यों इंजीलवादी इतनी बड़ी संख्या में रोमन कैथोलिक धर्म और पूर्वी रूढ़िवादी धर्म में जा रहे हैं? हाँ। क्या आपने उन पाँचों के लिए कहा कि वे सभी हैं? मैं शायद मार्क के कथन का उपयोग करूँगा जो उसने गुरुवार की रात को यहूदी धर्म से बात करते समय इस्तेमाल किया था।

कुछ मुद्दे ऐसे हैं जो गतिरोध में हैं। मुझे लगता है कि हमारे बीच हमेशा गतिरोध बना रहेगा। हम एक दूसरे के और करीब आ सकते हैं।

निश्चित रूप से, जब मैं रोमन कैथोलिकों से बात करता हूँ, तो मुझे इस बात का फ़ायदा होता है कि मेरी पीएचडी रोमन कैथोलिक संस्थान बोस्टन कॉलेज से हुई है। इसलिए, बोस्टन कॉलेज में बहुत सारे रोमन कैथोलिक थे। मेरे बहुत से शिक्षक रोमन कैथोलिक थे।

इसलिए, उदाहरण के लिए, मैरी में, मैं अपने कथन के साथ रोमन कैथोलिकों के थोड़ा करीब आ सकता हूँ कि आप लोगों ने मैरी को बहुत अधिक महत्व दिया है, लेकिन हमने मैरी को बहुत कम महत्व दिया है। हमें वास्तव में मैरी पर जितना हम करते हैं, उससे कहीं अधिक गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। और शायद बहुत समय हो गया है जब आप में से किसी ने मैरी पर कोई उपदेश नहीं सुना है, शायद साल के इस समय को छोड़कर।

लेकिन पोपसी जैसे अन्य मुद्दे, मेरा मतलब है, हाँ। तो, कुछ मुद्दे हैं जहाँ आप, मुझे लगता है, एक दूसरे के थोड़ा करीब आ सकते हैं। पोपसी जैसे अन्य मुद्दे, मुझे नहीं लगता कि आप ऐसा कैसे कर सकते हैं।

हम इस बात से सहमत नहीं हैं कि पीटर पहले व्यक्ति थे। इसलिए, मुझे लगता है कि यह मुद्दे पर निर्भर करता है। लेकिन यहूदियों के साथ मार्क की तरह बातचीत, मुझे लगता है कि रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच बातचीत जारी रहनी चाहिए।

गॉर्डन कॉलेज के लिए यह एक मुद्दा रहा है। यह कई सालों से फैकल्टी के बीच एक दिलचस्प मुद्दा रहा है कि क्या कोई रोमन कैथोलिक पूर्णकालिक प्रोफेसर के रूप में गॉर्डन कॉलेज में पढ़ा सकता है। अब, रोमन कैथोलिक यहां सहायक के रूप में पढ़ा सकते हैं, या वे विजिटिंग स्कॉलर या जो भी हो, के रूप में आ सकते हैं।

क्या वे पूर्णकालिक प्रोफेसर के रूप में पढ़ा सकते हैं? और इस पर मेरा हमेशा यही जवाब रहा है, नहीं, वे पूर्णकालिक प्रोफेसर के रूप में नहीं पढ़ा सकते। इसका कारण हमारा सैद्धांतिक कथन है, जिस पर हम सभी हर साल हस्ताक्षर करते हैं, और सभी संकाय हर साल अपने अनुबंधों पर हस्ताक्षर करते समय हस्ताक्षर करते हैं। इसलिए, पूर्णकालिक प्रोफेसरों को अनुबंध पर हस्ताक्षर करना होगा।

और हमारे लिए आस्था का पहला अनुच्छेद धर्मग्रंथ का अधिकार है। इसलिए, मैं हमेशा कहता हूँ कि गॉर्डन कॉलेज में आप जिस एकमात्र रोमन कैथोलिक को पढ़ाना चाहेंगे, वह एक गंभीर रोमन कैथोलिक होगा। आप यहाँ ऐसे रोमन कैथोलिक को नहीं चाहेंगे जो बहुत ज़्यादा आस्था नहीं रखता।

आप एक गंभीर रोमन कैथोलिक चाहते हैं। एक गंभीर रोमन कैथोलिक हमारे सैद्धांतिक बयान पर हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं होगा क्योंकि एक गंभीर रोमन कैथोलिक कहेगा, नहीं, अधिकार के दो स्रोत हैं। एक है शास्त्र, और दूसरा है परंपरा।

इसलिए, मैं वास्तव में इस सैद्धांतिक कथन पर हस्ताक्षर नहीं कर सकता क्योंकि आप धर्मग्रंथ को एकमात्र अधिकार के रूप में कायम रख रहे हैं। तो, हाँ। तो, यह दिलचस्प है।

मुझे लगता है कि यह मुद्दे पर निर्भर करता है। ठीक है, चलिए विश्व धर्मों के लिए दूसरे, तीसरे दृष्टिकोण पर चलते हैं। बस एक मिनट के लिए इसे विश्व धर्मों तक विस्तृत करें।

यह विश्व धर्मों पर कोई पाठ्यक्रम नहीं है, लेकिन आपको इसके बारे में सोचना होगा क्योंकि आज की दुनिया में, जब धर्मशास्त्र की बात आती है, तो हम विश्व धर्मों के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए, मैं केवल तीन चीजों का उल्लेख करने जा रहा हूँ। नंबर एक है बहिष्कारवाद।

एक तरह का बहिष्कारवाद का विचार है कि केवल वे लोग ही बचाए जाएंगे जो सुसमाचार सुनते हैं और उसका जवाब देते हैं। तो यह विश्व धर्मों, ईसाई धर्म से बाहर के धर्मों के प्रति एक दृष्टिकोण होगा। यह विश्व धर्मों के प्रति एक दृष्टिकोण है, एक तरह का बहिष्कारवाद, कि केवल वे लोग ही बचाए जाएंगे जो सुसमाचार सुनते हैं और उसका जवाब देते हैं।

इसलिए यह नहीं माना जाता कि शायद ईश्वर की आत्मा अन्य तरीकों से काम करती है और इसी तरह। यह नंबर दो है, समावेशवाद। समावेशवाद, हालांकि ईसाई धर्म मानक का प्रतिनिधित्व करता है, ईसाई धर्म सभी लोगों के उद्धार के लिए मसीह में ईश्वर के मानक रहस्योद्घाटन का प्रतिनिधित्व करता है समावेशवाद यह महसूस करता है और मानता है कि, कभी-कभी, ऐसे लोग होते हैं जो सुसमाचार नहीं सुनते हैं।

वे खुशखबरी नहीं सुनते। और यह संभव है कि यदि वे ईश्वर में विश्वास करते हैं और ईश्वर द्वारा उन्हें दी गई महान कृपा के अनुसार जीवन जीते हैं, तो वे उद्धार प्राप्त करेंगे। लेकिन यह एक तरह का समावेशवाद है, लेकिन यह एक तरह का एहसास है कि शायद ईश्वर उन लोगों के माध्यम से काम कर रहा है जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना है।

हो सकता है कि वह, फिर भी, अपनी आत्मा और सर्वोच्च अनुग्रह के माध्यम से किसी तरह से काम कर रहा हो। तो यह एक समावेशवाद है। यह एक तरह से बहिष्कारवाद से थोड़ा दूर जाने जैसा है, कि केवल तभी जब आपने यीशु के बारे में सुना है और अपने पापों का पश्चाताप किया है, आप बचाए जा सकते हैं।

हालांकि, समावेशवाद यह मानता है कि सभी ने यीशु के बारे में नहीं सुना है। तो, तीसरा तरीका बहुलवाद है। तीसरा तरीका बहुलवाद है।

अब, बहुलवाद कहता है कि सभी धर्म समान रूप से मान्य हैं। बहुलवाद एक तरह से ईसाई धर्म को त्यागना है, यह कहते हुए कि ईसाई धर्म ठीक है। यह ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।

यह ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है। लेकिन अन्य सभी धर्म भी ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग हैं, और वे सभी समान रूप से मान्य हैं। इसलिए आपको शायद एक धर्म को दूसरे धर्म के ऊपर चुनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हर धर्म आपको ईश्वर के साथ होने के लक्ष्य तक ले जाएगा। तो यह दिलचस्प है। अब, पॉल टिलिच जैसे लोग।

हम पहले ही पाठ्यक्रम में पॉल टिलिच का उल्लेख कर चुके हैं। पॉल टिलिच, एक ईसाई धर्मशास्त्री के रूप में, अपने धर्मशास्त्र के अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचे। उनका निष्कर्ष था कि सभी विश्व धर्म समान रूप से मान्य हैं।

इसलिए, उन्होंने ईसाई धर्म को बिल्कुल भी अनोखा नहीं माना। इसलिए, विश्व धर्मों से संपर्क करने के तीन तरीके हैं: अनन्य, समावेशी और बहुलवाद। हम एक व्यक्ति हैं, और मुझे बस देखना है।

मेरे पास यहाँ कुछ नाम हैं जिनका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ। ओह, इसके लिए माफ़ी चाहता हूँ। हाँ, वहाँ वह अंतिम नाम देख रहे हो? उस नाम पर ध्यान दें, जॉन कॉब।

उन्होंने क्राइस्ट इन ए प्लुरलिस्टिक एज नामक पुस्तक भी लिखी है। तो, बहुलवाद के अंतर्गत, मैं इसे दूसरे खंड के अंतर्गत उल्लेख करने जा रहा था, लेकिन यह ठीक है। आइए इसे बहुलवाद के अंतर्गत रखें, जॉन कॉब, क्राइस्ट इन ए प्लुरलिस्टिक एज।

मेरे पीएचडी कोर्स में से एक में, हमने इस विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया था कि यीशु कौन हैं, मसीह कौन हैं, इत्यादि। हमें जॉन कॉब की पुस्तक पढ़नी थी। अब, पुस्तक का सिद्धांत यह है कि मसीह की आत्मा यीशु में थी, लेकिन यीशु में उतनी ही नहीं जितनी कि मसीह की आत्मा शायद गांधी में थी, या उससे अधिक नहीं जितनी कि वह हिंदू देवी-देवताओं में थी, या उससे अधिक नहीं जितनी कि मसीह की आत्मा कन्फ्यूशियस में थी, या इस्लामी धर्म में मुहम्मद में थी।

शायद मुझे गांधी का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था, क्योंकि वह एक इंसान थे। लेकिन कन्फ्यूशियस, या मुहम्मद, या पूर्वी धर्मों के देवी-देवता। तो अब वह एक ईसाई धर्मशास्त्री हैं जो यह प्रस्ताव रख रहे हैं।

तो, यह एक आसान क्लास नहीं थी। लेकिन वैसे भी, मैंने वास्तव में इसके खिलाफ तर्क दिया, कि मसीह की आत्मा यीशु में थी, लेकिन धार्मिक परंपराओं के अन्य नेताओं की तरह नहीं। लेकिन यह निश्चित रूप से कोब की स्थिति है।

इसलिए, उन्होंने पुस्तक का शीर्षक रखा, बहुलवादी युग में मसीह। बहुलवादी युग में, आपको बहुलवाद को यह तय करने की अनुमति देनी चाहिए कि मसीह कौन है। इसलिए, मैं खुद एक अजीब दृष्टिकोण के बारे में सोचता हूँ, और मैं उस दृष्टिकोण की आलोचना करने के लिए तैयार हूँ।

लेकिन वैसे भी, विश्व धर्मों के प्रति तीन दृष्टिकोण हैं जिन पर हम ध्यान देना चाहते हैं। ठीक है, अब, मैंने बताया कि मैं पाठ्यक्रम के पृष्ठ 15 पर हूँ, यदि आप सभी मेरे साथ पृष्ठ 15 पर हैं। और मैं हमेशा सोचता हूँ कि अपने पापों को स्वीकार करना अच्छा है, इसलिए मैं अपने पापों को स्वीकार कर रहा हूँ।

E3 पर, मैंने E3 को छोड़ दिया, और मैं सीधे F पर चला गया। इसलिए मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था, लेकिन मैंने ऐसा किया। इसलिए हम E3 पर वापस जा रहे हैं, और हम इस तरह के निष्कर्ष पर पहुंचेंगे। और फिर, हम कुछ समापन टिप्पणियाँ करेंगे जो मैं करना चाहता हूँ।

E3, और E3 आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति है। ईसाई धर्मशास्त्र में आज हम कहाँ हैं? आज ईसाई धर्मशास्त्र में क्या चल रहा है? तो क्या यह समझ में आता है? अब मैंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है, आप मुझे मेरे पापों से मुक्त कर रहे हैं, जो एक अच्छी बात है, और अब हम E3 कर रहे हैं। मैं आपको भ्रमित नहीं करना चाहता, लेकिन ऐसा लगता है कि मैंने ऐसा किया है।

मेरे पास इसके लिए कुछ नोट्स हैं। आगे की चर्चा के लिए, किस लिए, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति क्या है? ठीक है, चलो, ठीक है, चलो, ठीक है, ठीक है, चलो देखते हैं कि हम यहाँ कहाँ हैं। धर्मशास्त्रीय आंदोलन कर सकते हैं तो मुझे बताएं कि आपके पास क्या है।

बस मुझे बताओ कि तुम्हारे पास क्या है। हाँ। ठीक है, ठीक है, ठीक है, मेरा मतलब था कि यह E2 है।

ईसाई धर्मशास्त्र और अन्य विषयों की ज्ञानोदय की आलोचना। मेरा मतलब था कि इसे E2 के अंतर्गत शामिल किया जाए। मेरा मतलब इसे E3 के अंतर्गत लाना नहीं था। क्या मैंने इसे E3 के अंतर्गत लाया, है न? खैर, भगवान मेरा भला करे।

ठीक है, ठीक है, अब मुझे दो पापों को स्वीकार करना है। पहला, आपको भ्रमित करने का पाप। और अब, हम तीसरे नंबर पर नहीं पहुँचे, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति का पाप।

तो क्यों न आप E4, आज के ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति को लिखें? आप ऐसा क्यों नहीं करते? क्योंकि यहाँ मैं नए रूढ़िवाद के बारे में बात करता हूँ, मैं आशा के धर्मशास्त्रों के बारे में बात करता हूँ; मैं मुक्ति और बहुलवाद के धर्मशास्त्रों के बारे में बात करता हूँ, और इसी तरह की अन्य बातें। और हमने ऐसा नहीं किया है।

तो आप ऐसा क्यों नहीं करते? आप ऐसा करते हैं, E4? ठीक है, आप E4 क्यों नहीं करते, जो एक तरह का धार्मिक आंदोलन है या ऐसा ही कुछ? आपके दिलों को आशीर्वाद दें, और हम ऐसा कर सकते हैं। ठीक है, ठीक है, ठीक है, E4। ठीक है, E4 पर नंबर एक वह है जिसे मैं कहता हूँ। आज चारों ओर एक नया रूढ़िवाद है।

और यह एक तरह से व्यापक संस्कृति के संदर्भ में 1976 में शुरू हुआ। और जिम रुडिन ने दूसरी रात अपने व्याख्यान में इसका उल्लेख भी किया। इसकी शुरुआत 1976 में जिमी कार्टर के संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में चुनाव के साथ हुई, इसे इंजील का वर्ष घोषित किया गया।

अब, टेड और मुझे याद है कि जब जिमी कार्टर को संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के लिए नामित किया गया था और 76 में जब वह नामित हुए थे, तब उन्होंने खुद को एक इंजीलवादी कहा था। और यह वास्तव में, एक तरह से, कुछ मीडिया वालों को यह कहते हुए अपना सिर खुजलाते हुए देखना हास्यास्पद था कि, एक इंजीलवादी, एक इंजीलवादी क्या है? खैर, हम नहीं जानते। हम जाकर पता लगाने जा रहे हैं कि एक इंजीलवादी क्या है। और, बेशक, उन्हें यह पता चल गया, लेकिन वे आमतौर पर इसे गड़बड़ कर देते थे।

इसलिए, वे आमतौर पर इसे ठीक से नहीं समझ पाते थे। लेकिन तब से, एक नया रूढ़िवाद आया है, जो निश्चित रूप से सामान्य संस्कृति का हिस्सा है। इसलिए, चर्च के संदर्भ में, नया रूढ़िवाद दो चीजों का एक विवाह था जिसके बारे में हमने पिछले शुक्रवार को बात की थी।

नया रूढ़िवाद यह अहसास था कि सुसमाचार का प्रचार और सामाजिक मंत्रालय दोनों ही सुसमाचार का हिस्सा हैं। नया रूढ़िवाद, एक तरह से, 19वीं सदी में अपने मॉडल के रूप में, अपने उदाहरण के रूप में फिने की ओर वापस चला गया, और कहा, हम प्रचार को सामाजिक मंत्रालय से, सामाजिक न्याय के मुद्दों से अलग करके गलत रहे हैं। हम उन्हें फिर से एक साथ ला रहे हैं।

डोनाल्ड डेटन की पुस्तक डिस्कवरींग इवेंजेलिकल हेरिटेज इसी बात का आह्वान है, है न? याद रखें, हमने मूल थीसिस का उल्लेख किया है। क्योंकि मैथ्यू 22 का पाठ क्या कहता है? अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से प्यार करो, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्यार करो। और इसलिए, नया रूढ़िवाद वास्तव में एक ऐसा आंदोलन रहा है जिसने उन दो चीजों को फिर से एक साथ ला दिया है जो एक अर्थ में अलग हो गई थीं।

तो यह एक धार्मिक आंदोलन है जिसका हम उल्लेख करना चाहते हैं, नया रूढ़िवाद, ठीक है? दूसरा धार्मिक आंदोलन, और जैसा कि मैंने कहा, E4, आप इन्हें धार्मिक आंदोलन या ऐसा कुछ कह सकते हैं। हालाँकि, दूसरा धार्मिक आंदोलन जो मेरे सेमिनरी प्रशिक्षण में मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था, वह जुर्गन मोल्टमैन और उनकी पुस्तक, द थियोलॉजी ऑफ़ होप, द थियोलॉजी ऑफ़ होप का लेखन था। तो आशा के धर्मशास्त्र रहे हैं, लेकिन हम इसके लिए अपने प्राथमिक साक्ष्य के रूप में मोल्टमैन की पुस्तक, द थियोलॉजी ऑफ़ होप का उपयोग करेंगे।

तो अब, मैं आपकी पाठ्यपुस्तक से पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि आपकी पाठ्यपुस्तक में इस पर कुछ बेहतरीन वाक्य दिए गए हैं। तो, मैं प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म, पृष्ठ 312 से पढ़ रहा हूँ। तो, अगर आप संदर्भ लिखना चाहते हैं, तो प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म, पृष्ठ 312।

और मुझे इसे पढ़ने दो, और फिर मैं जल्दी से इस पर वापस आऊंगा। लेकिन यहाँ आपके लेखक ने क्या कहा है। यह धर्मशास्त्र आशा है, उद्घरण, धर्मशास्त्र के दृष्टिकोण से पूरे धर्मशास्त्र पर पुनर्विचार था, अंत के रूप में नहीं, बल्कि आशा के रूप में, भगवान के भविष्य के रूप में, और इस प्रकार हमारा भविष्य।

उस दृष्टिकोण में, धर्मशास्त्र को पुनर्स्थापित किए जाने वाले सृजन के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि कुछ चर्च के पिताओं के अनुसार, एक ऐसे सृजन की ओर उन्मुख किया जाता है, जो पतन के बावजूद, अपने कथित मूल स्वर्गीय चरित्र से परे एक भविष्य रखता है। इसलिए, संपूर्ण मानवीय नाटक, अतीत और वर्तमान, उस अधूरे भविष्य में शामिल है जिसकी पहली जड़ें हमारे पास हैं। धर्मशास्त्र का क्षितिज विश्व इतिहास और उसके भविष्य जितना ही विस्तृत है।

प्रोटेस्टेंट ईसाई धर्म, पृष्ठ 312. तो, जुर्गन मोल्टमैन ने वास्तव में, एक अर्थ में, ईसाई धर्मशास्त्र को पुनर्निर्देशित करने में मदद की। और यह वास्तव में भविष्य के लिए एक आशाजनक बात है।

तो, दूसरे शब्दों में, आज ईसाई धर्मशास्त्र मुख्य रूप से ईडन के उद्धार के बारे में बात नहीं कर रहा है, जरूरी नहीं कि एक नया ईडन हो, बल्कि एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी हो। तो धर्मशास्त्र कहाँ जा रहा है, और ईसाई लोग कहाँ जा रहे हैं? वे इस नए स्वर्ग और इस नई पृथ्वी, इस तरह के पूर्ण राज्य की ओर बढ़ रहे हैं। तो, आशा के धर्मशास्त्र उभरे, जर्गेन मोल्टमैन इसके उदाहरण होंगे।

ठीक है, तीसरा, मुक्ति के धर्मशास्त्र। और मैं इसे जल्दी से बता रहा हूँ क्योंकि हमने शुक्रवार को इन तीनों का उल्लेख किया था क्योंकि कुछ सवाल उठे थे। लेकिन मैं आपको मुक्ति के धर्मशास्त्रों के तीन उदाहरण देता हूँ।

नंबर एक जेम्स कोन होंगे। उन्होंने ब्लैक थियोलॉजी एंड ब्लैक पावर नामक एक किताब लिखी है। इसलिए, जेम्स कोन अश्वेत समुदाय के लिए मुक्ति के चश्मे से धर्मशास्त्र की व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं।

यह बात जिम रूडिन के व्याख्यान में भी आई। अरे, मुझे इस व्याख्यान में शामिल होना था, लेकिन यह बात जिम रूडिन के व्याख्यान में भी आई। और हममें से कुछ लोग गुरुवार की रात को उनके साथ डिनर करने में सक्षम थे, और हमने डिनर के दौरान इस बारे में बहुत बात की।

हालाँकि, काले लोगों के लिए, जेम्स कोन ने अपनी पुस्तक में इस बात को स्पष्ट किया है। काले लोगों के लिए, पलायन पुराने नियम में एक महान अनुभव है, और यह उनका अनुभव बन गया है। तो, गुलामी से मुक्ति की ओर पलायन। तो, पुराने नियम से पलायन विषय, इस दुनिया में काले लोगों द्वारा अपनाया गया, वास्तव में आशा का धर्मशास्त्र प्रदान करता है।

ठीक है, तो हमने शुक्रवार को जेम्स कोन का ज़िक्र किया। हमने शुक्रवार को गुटिरेज़ का ज़िक्र किया। मुक्ति का धर्मशास्त्र।

इसलिए मुक्ति धर्मशास्त्र की शुरुआत दक्षिण अमेरिका में हुई, गरीबों की देखभाल, और इसी तरह मुक्ति का धर्मशास्त्र। और फिर हमने शुक्रवार को भी उल्लेख किया, वास्तव में, हमने मैरी डेली और बियाँड गॉड द फादर का उल्लेख किया, जो नारीवादी धर्मशास्त्र है। अब, मुझे एक मिनट के लिए नारीवादी धर्मशास्त्र की व्याख्या करने दें क्योंकि हमने शुक्रवार को इसके बारे में बात की थी, लेकिन मैरी डेली एक कट्टरपंथी नारीवादी धर्मशास्त्री थीं।

जब वह अपनी पुस्तक बियाँड गॉड द फादर में कहती हैं, तो वह वास्तव में बाइबिल की भाषा के बारे में बात कर रही हैं और कैसे हम बाइबिल की भाषा को महिलाओं के साथ-साथ पुरुषों के लिए भी उपयुक्त बना सकते हैं। लेकिन यह उससे आगे जो कुछ भी उन्होंने कहा, उसकी तुलना में हल्का था। क्योंकि आखिरकार, मैरी डेली ईसाई रूढ़िवाद से बहुत आगे निकल गई।

इसलिए, उसने ईसाई चर्च को पूरी तरह से खत्म होते हुए देखा, और वह ईसाई रूढ़िवाद से बहुत आगे निकलकर एक नए युग, एक नए युग के नारीवादी धर्मशास्त्र और नए युग के धर्म में चली गई। मेरा मतलब है, यह वास्तव में विचित्र था। हमने उसकी कहानी का उल्लेख किया और उसके बारे में बात की।

उसे बोस्टन कॉलेज से निकाल दिया गया। आखिरकार, उसे टेन्योर नहीं मिला और उसे बोस्टन कॉलेज से निकाल दिया गया। तो यह मुक्ति का धर्मशास्त्र है।

अब, उनमें से तीन हैं, उदाहरण के लिए, अश्वेत धर्मशास्त्र, मुक्ति का धर्मशास्त्र, और नारीवादी धर्मशास्त्र, ठीक है? मैं बस यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि हमने पहले ही कहा है कि अगला समूह जो मुझे मिला है वह बहुलवाद और ईसाई धर्म का अन्य धर्मों से संबंध है, और वह जॉन कॉब की पुस्तक होगी। तो हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं, लेकिन निश्चित रूप से, ईसाई धर्मशास्त्र के भीतर, बहुलवाद है। और जॉन कॉब की पुस्तक में हमने बहुलवाद के बारे में जो कहा वह उससे संबंधित होगा, इस खंड से, ठीक है? और अंतिम खंड, और फिर मैं यहाँ कुछ आलोचनाएँ लाने जा रहा हूँ, लेकिन भविष्य में आगे बढ़ने के संदर्भ में अंतिम प्रकार का खंड इंजीलवाद है।

इवेंजेलिकलिज्म के पास भविष्य के बारे में कहने के लिए कुछ है, और इस बारे में कोई संदेह नहीं है। तो इवेंजेलिकलिज्म, और इसके लिए, मैंने उल्लेख किया, क्या मैंने उल्लेख किया? नहीं, मैंने एलिस्टेयर मैकग्राथ की पुस्तक इवेंजेलिकलिज्म एंड द फ्यूचर ऑफ क्रिश्चियनिटी का उल्लेख किया है। तो, एलिस्टेयर मैकग्राथ, एक बहुत ही दिलचस्प शीर्षक, इवेंजेलिकलिज्म एंड द फ्यूचर ऑफ क्रिश्चियनिटी।

क्योंकि ऑक्सफोर्ड में एक इंजील शिक्षक के रूप में एलेस्टेयर मैकग्राथ, इंजीलवाद को चर्च की महान आशा के रूप में देखते हैं और इस दुनिया को समझने के संदर्भ में चर्च के लिए भविष्य की महान आशा के रूप में देखते हैं जिसमें हम रहते हैं और इस दुनिया को सुसमाचार सुनाते हैं जिसमें हम रहते हैं। तो यह अगला समूह होगा जो मेरे पास आज धर्मशास्त्र की दिशा के संदर्भ में है। ठीक है, यह सब कहने के बाद, मुझे इन सभी धर्मशास्त्रों की कुछ आलोचनाएँ देनी चाहिए।

तो, और शायद कुछ हद तक इंजील धर्मशास्त्र भी शामिल है, लेकिन हमारे पास नई रूढ़िवादिता, आशा के धर्मशास्त्र, मुक्ति के धर्मशास्त्र, बहुलवाद, इंजीलवाद है, कुछ आलोचनाएँ क्या हैं? ठीक है, मुझे लगता है कि मेरी पहली आलोचना यह है कि प्रिंसटन में मेरे एक प्रोफेसर इसे महीने के क्लब का धर्मशास्त्र कहते थे, महीने के क्लब का धर्मशास्त्र। और शायद वह आंशिक रूप से सही था, और शायद हम महीने के क्लब के धर्मशास्त्र के युग में रह रहे हैं। शायद हम ऐसे युग में रह रहे हैं जब धर्मशास्त्र बस एक सांस्कृतिक चीज़ से दूसरी सांस्कृतिक चीज़ की ओर बढ़ रहा है।

और यही हम पा रहे हैं, महीने के क्लब का धर्मशास्त्र, जिसका मतलब है कि हमें 21वीं सदी के शुरुआती चर्च से एक अच्छा स्थिर-अवस्था धर्मशास्त्र नहीं मिल रहा है। इसलिए मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिस पर हमें नज़र रखनी होगी, सुनिश्चित करना होगा कि हम जिस धर्मशास्त्र के बारे में बात कर रहे हैं वह सिर्फ महीने के क्लब के धर्मशास्त्र का हिस्सा न हो, इसलिए। दूसरी बात जो मुझे आलोचना के रूप में महत्वपूर्ण लगती है वह यह है कि हमने जिन धर्मशास्त्रों के बारे में बात की है उनमें से कई बाइबल पर आधारित हैं।

उन्होंने एक बहुत ही स्पष्ट बाइबिल आधार, एक बाइबिल कारण के साथ शुरुआत की। वे जो कर रहे थे उसके लिए उनके पास वास्तव में एक अच्छा बाइबिल जैसा दृष्टिकोण था। लेकिन उनमें से कई लोग उस दृष्टिकोण से दूर चले गए।

मोल्टमैन के लिए भी सच होगी, जो आशा के अपने धर्मशास्त्र से दूर जाने लगा। वह बाइबल को ईश्वर के एक अद्वितीय रहस्योद्घाटन के रूप में देखने से दूर जाने लगा। इसलिए यह मेरी आलोचना है।

मुझे लगता है कि हमें इस बात से सावधान रहना चाहिए। आपको बाइबल के आधार पर शुरू और खत्म करना होगा। लेकिन इनमें से बहुत से धर्मशास्त्र बाइबल के आधार पर शुरू हो सकते हैं लेकिन फिर दूर चले जाते हैं, इसलिए।

ठीक है, मेरी तीसरी आलोचना यह है कि इनमें से कई धर्मशास्त्र भी क्राइस्टोलॉजिकल आधार पर शुरू होते हैं। इनमें से कई धर्मशास्त्र वास्तव में क्राइस्टोलॉजी को समझने और इसे धर्मशास्त्र के ढांचे के रूप में स्पष्ट रूप से समझने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उससे दूर चले गए। अब, जब आप जॉन कॉब के बाद के लेखन की तुलना में शुरुआती लेखन को देखते हैं, तो आप देखेंगे कि जॉन कॉब के साथ ऐसा ही हुआ था।

अपने पहले के लेखों में, वे मसीह-आधारित हैं। उनके बाद के लेखों में, मसीह की भावना यीशु में पाई जा सकती है, लेकिन कन्फ्यूशियस में जितनी पाई जा सकती है, उससे कहीं अधिक नहीं। इसलिए, यहाँ एक फिसलन भरी ढलान है, जो मसीह-आधारित होने से दूर जाने जैसा है।

ठीक है, मेरी अगली आलोचना यह है कि इनमें से कुछ आंदोलन स्पष्ट रूप से ईसाई विरोधी हैं। और मेरी डेली इसका एक आदर्श उदाहरण है कि वह अपने जीवन में कैसे समाप्त हुई। वह ईसाई धर्म के भीतर एक तरह की वफादार चर्चाकार नहीं बनी, लेकिन उसका धर्मशास्त्र पूरी तरह से ईसाई विरोधी बन गया।

वास्तव में चर्च को मिटा देना चाहते हैं, और चर्च से बाहर निकल जाना चाहते हैं, इसलिए। ठीक है, तो ये कुछ प्रकार की आलोचनाएँ हैं जो मेरे पास हैं, लेकिन यही वह स्थिति है जिसमें हम हैं, महीने के धर्मशास्त्र क्लब की स्थिति, और यही वह जगह है जहाँ हम हैं। ठीक है, यह पाठ्यक्रम का निष्कर्ष है, व्याख्यान 14।

मैं कुछ समापन टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। और ऐसा करने से पहले, क्या उस धर्मशास्त्र विषय के बारे में कुछ है जिसके बारे में हमने अभी बात की थी? मैं सुनिश्चित करूँगा कि अगली बार जब मैं यह पाठ्यक्रम पढ़ाऊँ तो मैं उस E खंड तीन को न छोड़ूँ जैसा कि मैंने आप लोगों के साथ किया था। और आपको भ्रमित करने के लिए, मैं सुनिश्चित करूँगा कि ऐसा दोबारा न हो।

तो, क्या आपके पास इसके बारे में कोई सवाल है? ठीक है, मैं क्या कहना चाहूँगा, हाँ, एलेक्स? हाँ, थियोलॉजी ऑफ़ द मंथ क्लब, मेरे प्रिंसटन प्रोफेसर। यह लगभग थियोलॉजी ऑफ़ द मंथ क्लब की तरह है, यहाँ संस्कृति है। और संस्कृति के साथ बने रहने के लिए, हमें एक नए धर्मशास्त्र की घोषणा करने की आवश्यकता है।

इसलिए हमें नारीवादी धर्मशास्त्र अपनाना होगा क्योंकि संस्कृति नारीवादी होती जा रही है। हमें बहुलवादी धर्मशास्त्र अपनाना होगा क्योंकि संस्कृति बहुलवादी होती जा रही है। इसलिए हमें ऐसा धर्मशास्त्र अपनाना होगा जो उस बहुलवाद की बात करे।

तो इसका खतरा यह है कि संस्कृति हमेशा एक गतिशील लक्ष्य बनी रहेगी। और अगर धर्मशास्त्र हमेशा उस लक्ष्य का पीछा करने की कोशिश करता रहेगा, तो आप हमेशा संस्कृति का सामना करने के लिए एक नया धर्मशास्त्र गढ़ते रहेंगे। तो यही उनकी आलोचना थी, हाँ।

अगर धर्मशास्त्र का कोई मतलब है, तो उसे बाइबल में अच्छी तरह से समाहित होना चाहिए, जो सभी समय और सभी संस्कृतियों के लिए एक शाश्वत शब्द है। क्या यह समझ में आता है? यह उनकी आलोचना थी। ठीक है, पाठ्यक्रम का निष्कर्ष।

मेरे पास कुछ समापन टिप्पणियाँ हैं जो मैं कहना चाहूँगा। और फिर, हमारे साथ शामिल होने वाले लोगों के लिए, हमने आखिरी दस मिनट में कहा, अगर आप इसमें भाग लेना चाहते हैं, तो मैं बस यह जानना चाहता हूँ कि आपका अपना सांप्रदायिक जीवन कैसा रहा है। लेकिन आपको भाग लेने की ज़रूरत नहीं है, और आप बस कह सकते हैं कि मैं पास हूँ।

तो, ठीक है, मैं कुछ समापन टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। नंबर एक, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगा यदि आप इस पाठ्यक्रम से परे धर्मशास्त्र के विकास को गंभीरता से देखने जा रहे हैं। मुझे लगता है कि हमारी पद्धति लोगों, विचारों और घटनाओं के लिए सहायक है। ये तीन प्रश्न हैं जो आपको हमेशा खुद से पूछने चाहिए यदि आप वास्तव में धर्मशास्त्र की जांच और अध्ययन करने जा रहे हैं।

वे लोग कौन हैं, उनके विचार क्या हैं, और वे कौन सी महान घटनाएँ हैं जिन्होंने उन विचारों को आकार दिया है? यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसलिए, यदि आप धर्मशास्त्र में रुचि रखते हैं, तो मैं उन बातों को ध्यान में रखूँगा। यह नंबर एक है।

नंबर दो, मैं बस कुछ ऐसे लोगों का जिक्र करना चाहता हूँ जिनके बारे में हमने इस कोर्स में बात की है; सामान्य तौर पर, जिन लोगों के बारे में हमने इस कोर्स में बात की है, वे ऐसे लोग हैं जिनके पास बहुत बढ़िया पादरी, बहुत बढ़िया पादरी की समझ थी। वे ऐसे लोग थे जो लोगों की खातिर धर्मशास्त्र करना चाहते थे। वे धर्मशास्त्र को सिर्फ एक अकादमिक अभ्यास के तौर पर नहीं करना चाहते थे।

केल्विन या लूथर, श्लेयरमाकर, बार्थ या नीबूर का यह सब कुछ नहीं था। वे पादरी धर्मशास्त्र के बारे में थे, वेस्ले, मैं भी, निश्चित रूप से, सोचता हूँ। वे पादरी धर्मशास्त्र के बारे में थे।

अब, मुझे यह कहते हुए खेद है कि आज यह बदल गया है। आज, बहुत से लोग धर्मशास्त्र को सिर्फ एक अकादमिक अभ्यास के रूप में पढ़ रहे हैं। यह उनके लिए कुछ ज़्यादा मायने नहीं रखता, और यह चर्च में बैठे लोगों के लिए भी कोई मायने नहीं रखता।

और टेड और मैं अभी हाल ही में बाल्टीमोर में अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन की मीटिंग में थे, और यहाँ आप देख सकते हैं कि यह कितना स्पष्ट है। आज बहुत से लोग धर्मशास्त्र को केवल एक अकादमिक अभ्यास के रूप में ही पढ़ रहे हैं। उन्हें उस व्यक्ति में कोई दिलचस्पी नहीं है जो चर्च में बैठा है।

और यह एक वास्तविक खतरा है, मुझे लगता है। तो यह नंबर दो है, इसलिए। नंबर तीन यह है कि मैं हमेशा चाहता हूँ कि आप इस तरह से रहें। हम इस कोर्स में जो करने की कोशिश करते हैं वह आपको सुधार से लेकर वर्तमान तक का एक शानदार दृश्य देना है।

मेरा मतलब है, सिर्फ रिफॉर्मेशन में कोई कोर्स पढ़ाना अच्छा रहेगा, या सिर्फ 18वीं सदी में कोई कोर्स पढ़ाना अच्छा रहेगा, या सिर्फ 19वीं सदी में कोई कोर्स पढ़ाना अच्छा रहेगा। लेकिन हम चाहते हैं कि आपको धर्मशास्त्र का कुछ विस्तृत ज्ञान मिले, और यही हमने कोर्स में करने की कोशिश की है, और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। नंबर चार यह है कि धर्मशास्त्र का केंद्र मसीह है।

आपको हमेशा ऐसा करना चाहिए। हालाँकि, आप अपना खुद का धर्मशास्त्र विकसित कर रहे हैं, इसे हमेशा क्राइस्टोलॉजिकल रूप से विकसित किया जाना चाहिए। तो बोनहोफ़र का वह प्रश्न, आज हमारे लिए मसीह कौन है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। लेकिन अगर आपका धर्मशास्त्र, जैसा कि आप अपना खुद का धर्मशास्त्र विकसित कर रहे हैं, अगर आप क्राइस्टोलॉजिकल प्रश्न और यीशु कौन है, पर वापस नहीं आते हैं, तो आपके धर्मशास्त्र के भटक जाने का खतरा है।

यह ऐसा होगा जैसे हमारी पृथ्वी सूर्य से दूर जा रही है, आप जानते हैं? ऐसा करने में खतरा होगा, है न? तो, हमेशा अपने धर्मशास्त्र की व्याख्या क्राइस्टोलॉजिकल तरीके से करें। अगली, दो और बातें, लेकिन आखिरी से अगली बात यह है। अब, मुझे उम्मीद है कि आपको इस कोर्स से कुछ तकनीकें मिली होंगी, जिनके द्वारा आप अपना खुद का धर्मशास्त्र तैयार कर सकते हैं।

तो, आपको सोचना होगा कि आपका अपना धर्मशास्त्र क्या है। यह सब किस बारे में है? लेकिन यहाँ कुछ ऐसा है जो मैंने पाठ्यक्रम में कई बार कहा है, कम से कम मुझे लगता है कि मैंने कहा है, अगर मैंने नहीं कहा है, तो मुझे कहना चाहिए था। लेकिन ईसाई धर्म एक बहुत ही व्यक्तिगत धर्म है, लेकिन यह कभी भी निजी धर्म नहीं है। आप केवल चर्च के संदर्भ में, विश्वासियों के समुदाय में ही अपना धर्मशास्त्र तैयार कर सकते हैं।

आप ऐसा नहीं कर सकते, यह आप और आपकी बाइबल अकेले ही नहीं हैं जो आपके धर्मशास्त्र को तैयार कर रहे हैं। यह आप और आपकी बाइबल ही हैं जो चीज़ों के बारे में सोचते हैं और फिर जो आपने सोचा है उसे मसीह के शरीर, चर्च, विश्वासियों के समुदाय तक पहुँचाते हैं। तो आप यही करते हैं।

मैं आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आप धर्मशास्त्र तैयार करेंगे लेकिन एक समुदाय के संदर्भ में। यह एक अकेले का अभ्यास नहीं है। मैंने यह कहा; हमने यह तब कहा जब हम कैल्विन के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन लोगों के पास कैल्विन के बारे में गलत दृष्टिकोण है।

लोग कैल्विन के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि वह धर्मशास्त्र का एक अकेला पथप्रदर्शक था और सिर्फ अपना धर्मशास्त्र ही करता था। यह सच नहीं है। कैल्विन हर मंगलवार को सुधारवादी पादरियों से मिलते थे और रविवार को उपदेश देने वाले धर्मशास्त्र पर चर्चा करते थे।

लेकिन कैल्विन यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वह और अन्य लोग धर्मग्रंथों के बारे में एक समान दृष्टिकोण रखें। इसलिए, मैं आपको ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। और फिर, अंत में, मेरी अंतिम समापन टिप्पणी के संदर्भ में, आइए कैल्विन या बार्थ या श्लेयरमेकर से याद करें कि धर्मशास्त्र को हर पीढ़ी में पुनर्व्याख्यायित किया जाना चाहिए।

आप अतीत से विरासत में कुछ नहीं ले सकते और कह सकते हैं कि अब हम इसे स्पष्ट कर चुके हैं। इसलिए, हर पीढ़ी में धर्मशास्त्र को फिर से समझना और उसकी व्याख्या करना आवश्यक है, और आपको हर पीढ़ी में उस धर्मशास्त्र के प्रति खुद को फिर से प्रतिबद्ध करना होगा। इसलिए, ऐसा करना महत्वपूर्ण है।

और हम उन लोगों के आभारी हैं जिन्होंने ऐसा किया है जैसे कैल्विन या श्लेयरमाकर या रौशनबुश या बार्थ या वे लोग जिनके बारे में हमने बात की है। हम उनके आभारी हैं क्योंकि उन्होंने यही किया है। उन्होंने अपने समय के धर्मशास्त्र को फिर से समझने की कोशिश की है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह आधुनिक धर्मशास्त्रों पर सत्र 27 है।